युगें अठ्ठावीस विटेवरी उभा (विठ्ठलाची आरती)

इन पाठों के बारे में

स्रोत
हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण
रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

युगें अठ्ठावीस विटेवरी उभा (विठ्ठलाची आरती)

प्रकार	आरती
देवता	विठ्ठल (विठोबा)
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	श्रीहरिभजनामृत, भाग 1 — संपादक जगन्नाथ रघुनाथ आजगांवकर, 1865 — aarti 215, printed pp. 103–104 (archive.org in.ernet.dli.2015.366042, leaves 113–114)
आभार	पाठ: श्रीहरिभजनामृत भाग 1 (1865), archive.org पर DLI स्कैन, OCR स्कैन से सुधारी गई। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain (traditionally attributed to Sant Namdev, 13th–14th century). OCR of the 1865 print corrected

युगें अठ्ठावीस विटेवरी उभा ।

yugeṃ aṭhṭhāvīs viṭevarī ubhā |

वामांगी रखुमाई दिसे दिव्यशोभा ।

vāmāṃgī rakhumāī dise divyaśobhā |

पुंडलिकाचे भेटी परब्रम्ह आलें गा ।

puṃḍalikāce bheṭī parabramha āleṃ gā |

चरणीं वाहे भीमा उद्धरी जग ॥ १ ॥

caraṇīṃ vāhe bhīmā uddharī jag || 1 ||

जयदेव जयदेव जय पांडुरंगा ।

jayadev jayadev jay pāṃḍuraṃgā |

रखुमाईवल्लभा राहीच्या वल्लभा पावें जिवलगा ॥ धु० ॥

rakhumāīvallabhā rāhīcyā vallabhā pāveṃ jivalagā || dhu0 ||

तुळसीमाळा गळां कर ठेवुनि कटीं ।

tuḷasīmāḷā gaḷāṃ kar ṭhevuni kaṭīṃ |

कासे पीतांबर कस्तुरि लल्लाटीं ।

kāse pītāṃbar kasturi lallāṭīṃ |

देव सुरवर नित्य येति भेटी ।

dev suravar nitya yeti bheṭī |

गरुड हनुमंत पुढें उभे राहती ॥ २ ॥

garuḍ hanumaṃt puḍheṃ ubhe rāhatī || 2 ||

धन्य वेणुनाद अनुक्षेत्रपाळा ।

dhanya veṇunād anukṣetrapāḷā |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

सुवर्णाचीं कमळें पदमाळा गळां ।

suvarṇācīṃ kamaḷeṃ padamāḷā gaḷāṃ |

राई रुक्माबाई राणिया सकळा ।

rāī rukmābāī rāṇiyā sakaḷā |

ओंवाळिते राधा विठ्ठळ सांवळा ॥ ३ ॥

oṃvāḷite rādhā viṭhṭhaḷ sāṃvaḷā || 3 ||

ओंवाळूं आरत्या कुरवंड्या येती ।

oṃvāḷūṃ āratyā kuravaṃḍyā yetī |

चंद्रभागेमाजी सोडुनियां देती ।

caṃdrabhāgemājī soḍuniyāṃ detī |

दिंड्यापताका वैष्णव नाचती ।

diṃḍyāpatākā vaiṣṇav nācatī |

पंढरीचा महिमा वर्णावा किती ॥ ४ ॥

paṃḍharīcā mahimā varṇāvā kitī || 4 ||

आषाढी कार्तिकी भक्तजन येती ।

āṣāḍhī kārtikī bhaktajan yetī |

चंद्रभागेमाजी स्नान जे करिती ।

caṃdrabhāgemājī snān je karitī |

दर्शनहेळामात्र तयां होय मुक्ति ।

darśanaheḷāmātra tayāṃ hoy mukti |

केशवासी नामदेव भावें ओंवाळिती ॥ ५ ॥

keśavāsī nāmadev bhāveṃ oṃvāḷitī || 5 ||

अर्थ

अट्ठाईस युगों से वे ईंट पर खड़े हैं, वामांग में रखुमाई की दिव्य शोभा; पुंडलिक से मिलने परब्रह्म आया और चरणों में बहती भीमा जगत का उद्धार करती है। ध्रुवपद में रखुमाई और राही के प्रिय पांडुरंग की जय है। गले में तुलसी की माला, कमर पर हाथ, पीतांबर और ललाट पर कस्तूरी; देव, गरुड़ और हनुमान सेवा में खड़े हैं। वेणुनाद के बीच राही-रुक्माबाई साँवले विठ्ठल की आरती उतारती हैं; भक्त आरतियाँ लाकर चंद्रभागा में छोड़ते हैं, वैष्णव दिंडी-पताका लेकर नाचते हैं; आषाढ़ी-कार्तिकी को स्नान करने वालों को दर्शन मात्र से मुक्ति मिलती है, और नामदेव केशव की आरती उतारते हैं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।